PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume - 11 | Issue - 02 | February - 2022 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

'राम की भाक्तिपूजा' की श्रेष्ठता'

डॉ0 सुमन कुमारीं

एसोसिएट प्रो0 (हिन्दी) राजकीय महाविद्यालय टनकपुर (चम्पावत)

'राम की शक्तिपूजा' का आधार देवी भागवत, शिवमहिम्न स्त्रोत्र, दुर्गा सप्तशती और शिवसंहिता है, फिर भी निराला ने इनके आधार को ही ग्रहण किया है, अनुवाद नहीं किया है। अपनी उदान्त भावनाओं और कल्पनामयी चिन्तानाओं से इस कथानक का अभिनव श्रंगार किया है। इन सूत्रों को एकत्र करके निराला ने पौराणिक कथा को नया रूप प्रदान किया है। 'देवी भागवत' में राम ने शक्ति की आराधना युद्ध से पूर्व की है, पर निराला के राम युद्ध के बीच में, शक्ति की आराधना उस समय करते हैं जब शक्ति की सहायता से अजेय बना रावण राम की सेना को त्रस्त कर देता है। दूसरे राम विष्णु की तरह एक सहस्त्र नीलकमल न चढ़ाकर एक सौ आठ ही कमल चढ़ाते है।

'राम की शक्तिपूजा' ने राम द्वारा शक्ति की आराधना केवल एक दिन ही नहीं होती वरन् वह नवरात्र का व्रत पूर्ण करते हैं और उस समय के बीच लक्ष्मण द्वारा युद्ध का कार्य संचालन होता है। 'श्शक्ति पूजा' में नारद का कार्यजाम्बवान् करते हैं। जाम्बवान ही राम की शक्ति की पूजा करने का परामर्श देते हैं। विष्णु की पूजा की तरह राम की पूजा का आरम्भ होती है। विष्णु ने शंकर को प्रसन्न करने के लिए आराधना की थी और राम शक्ति के लिए करते हैं, परपरिणति शिव–पूजा वाली ही है।

निराला की तीसरी मौलिकता हनुमान द्वारा महाशक्ति को आतंकित कर उसके छली रूप का प्रस्तुत करना है। शक्ति एक ही है, पर उसके रूप अनेक है। 'दुर्गा सप्तशती' मे अम्बे 'मुंड' राक्षस से कहती हैं– ''यह जितनी भी विभिन्न शक्तियों के रूप दिखाई दे रहे हैं, यह मेरे ही प्रतिरूप हैं और देख ले सब मेरे ही शरीर मे समा रही है।'' अतः जो व्यक्ति शक्ति की आराधना कर उसे प्रसन्न कर लेता है, वह उसकी सहायता करने लगती है। अन्यायी रावण की साधना के कारण उसकी सहायता करती हुई शक्ति का अन्यायी रूप हनुमान की अमोध शक्ति के सम्मुख कांपता–सा प्रतीत होता है। हनुमान को आकाश में आया हुआ देखकर शिव शक्ति को सावधान करते हैं।

'हनुमान चालीसा' में देवता हनुमान की विनती करते हैं–
''देवन आन करी विनती सब छाँड़ि दियो .....।''

पर यहाँ शक्ति छल से काम लेकर उन्हें शान्त करके लौटा देती है। निराला यहाँ राम की शक्ति से अजेय बने हनुमान के सामने अन्याय को प्रश्रम देने वाली शक्ति को आतंकित होता दिखाते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि अन्याय का समर्थन करने वाली शक्ति अजेय नहीं होती। यदि पवित्रात्मा शक्ति उपासना कर ले तो अन्यायी की शक्ति पराजित हो जाती है। निराला जी हनुमान के माध्यम से यही सिद्ध करना चाहते हैं। इस अन्यायी शक्ति को निराला ने 'श्यामा' कहा है और उसे भीम भयंकर कहा है–

''फिर देखी भीमा–मुर्ति आज रण देखी जो''।
ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग ग
पा महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन।।''

इस श्यामा के मुख में अन्याय का दामन करने वाले सम्पूर्ण ज्योतिर्मय अस्त्र समाकर निश्फल हो जाते है और शक्ति रात्रि के समान अन्धकारमयी दिखाई गई है–

''रावण–महिमा भयामा विभावरी, अन्धकार।''
यही कारण है कि राम की उज्जवल शक्ति के कारण उसका तेज फीका पड़ जाता है और वह शक्तिहीन दिखाई देती है।

अन्यायी का शक्ति कुछ दिन भले ही उसका साथ दे–दे, पर कालान्तर में स्वयं उसी के लिए घातक सिद्ध होती है। इस आधार को निराला ने शक्ति के दो रूपों की कल्पना की है। शक्तिवान पशुता शक्तिशाली न्यायी के सामने पद–दलित होती है। राम इस समय रावण के सामने परास्त हो रहे हैं, केवल इसीलिए क्योंकि रावण शक्ति की आराधना के कारण बना हुआ है और राम अकेले हैं। अतः निर्बल हैं। मूलतः शक्ति एक है, पर उपासना–भेद से दो रूप हो जाते हैं। रावण द्वारा दुरूपयोग की जाने वाली शक्ति का दमन करने के लिए जाम्बवान राम को शक्ति की मौलिक कल्पना कर रावण पर विजयी होने का परामर्श देते हैं–

''हे पुरूषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण।''
जाम्बवान की इस मन्त्रणा से यह सन्देह भी निहित है कि अत्याचारी पर विजयी होने के लिए स्वयं भी पहले शक्तिशाली होना चाहिए।

अन्त में मैं यह कहना चाहूँगी कि निराला जी ने पौराणिक आख्यान का आधार लेकर भी 'राम की शक्ति पूजा' में अपनी प्रतिभा और कल्पना से पर्याप्त मौलिकता का समावेश किया है। राम की अलौकिकता यहाँ पूर्ण मानवता में परिवर्तित हो गई है, राम साधारण विशिष्ट मानव की तरह है जो शक्ति की आराधना करके शक्तिवान होते है और अत्याचारी का नाश करते हैं। राम मानव हैं और उनके कर्म भी मानवोचित हैं। अन्तर केवल इतना है कि बल परवह महान और उच्चतर बन जाते हैं कि अलौकिक और अवतारी लगते हैं। 'राम की शक्ति पूजा' जन–जन को शक्तिवान का सन्देश देती है।

सहायक पुस्तक सूची–

पुस्तकों का नाम	सम्पादक
1. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	– डा रामविलास शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहबाद।
2. निराला की साहित्य साधना	–डॉ0 रामविलास शर्मा। (भाग–1,2,3)
3. क्रान्तिकारी कवि निराला	– श्री बच्चन सिंह
4. निराला आत्महंता व्यक्तित्व	–श्री दूधनाथ सिंह
5. निराला रचनावली –	श्री नंदकिशोर नवल